

या

क्रैलसवयंयम् ॥ विष्णुजनयाय ॥ खुसवयंयम् ॥ ॥ ॐ
 गियाने किल विद्विसमायं ॥ ॥ ॥ ॐ सवगु ८६६ मि
 एडमा ॥ ५५ वदि १५ बीज १ सथयाने कि पृष्ठक वंग या जुन ॥
 लिखितं, यन्य शहर तथा शावजा वा नाम श्रुतं व सिखा म
 वावपा चाना तथा ॥ हर्षम् निया न वाया विया जुन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ASHA ARCHIVES

2701

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ शदोग्रन्मं दुदानं ॥ ॥ ॐ जाकि वजि कुर्वं धलक सि
 धति ॥ ३३ ॥ कदामाधि हामुकुण लं स्व थग कला सगया ३ ॥ सुलात
 फ ॥ कुणद द्यायान ॥ महावाक काय ॥ अथ काय ॥ ॥ ॐ अथ
 वालाहा कलफ वेव सगम नै न्यन स कलि उग्र गुनत स ॥ ३३ ॥

जां प्रविष्य सुपाय वा ॥ किं कुरु ॥ सुमा लयां दक्षिण नपा
 ॥ संखवर्षत समिप ॥ ॥ ॐ संवलाका लम ॥ ३३ ॥ उपचुं बुह ॥
 ॥ ॐ वपुचुपर्वत ॥ ॥ ॐ स्वयां प्रवेग्य स्मन ॥ ॥ अथ वेग नाग संनि
 धानि ॥ नपा लद ॥ ॥ वागम स्याया पूर्व कुरु ॥ कसिकायां वक्षि मकु
 ल ॥ पुला मत्यायां उग्र कुरु ॥ ॥ विनृपा रुद वनानि र्वा सि न स्वगम

ननाशा ३३ श्रुता सति न श्रुत न दहा यः ३३ पतिसं निधमं न ॥
 हिमां स मंदल ॥ श्रुतं मधुपुत्रि महानगन ॥ श्रुतं बालका मा निः
 निर्वासित ॥ ॥ **श्रुतं काय** ॥ ॥ ३३ जथागतं तथ गतायां पूर्व गा
 मधु सापुत्रिपा नितां दक्षिना हि मुसं पिं नु या त्वा विप सि ना द न
 नायां महावला केन का र्वा स्य देवं नु ॥ श्रुतं काय स्यं च ग्वत्तु पुस

॥ सि सि ना वि स्व ३३ तथ क्रु चु द ॥

यस्य धम ॥ **श्रुतं का** ॥ सर्व वि स वा पा य वि ष्व ध न महा व जा ह
 व सर्व न थ गत नृत्त वा धि दृढ क व ष्व व स्मा र्त्त का लो कानिः
 पार मिता व स्य पु ज्ञा मि ध स मु द स र्त न स मय स धम ॥ **पुत्र** ॥
 स वि स वा पा य पा र्त्त मिता महा व जा ह व त म ना अ रि म रा उ रू ल
 पुष्य ष्व ध म ॥ ॥ सर्व वि स वा पा य वि ष्व ध न महा व जा ह

वयस्वयं यथापह्ला पातमि नापुष्प प्रजामि धस सुदक्ष रुतन
 समय स्वधम ॥ **धूपयम** ॥ सर्व विसवापाय विश्व धन महावः
 अरु ने धम्म धूप धम्म नपा तमि ना धूप प्र जामि धस सुदक्ष रुतन
 समय स्वधम ॥ **दिपउयक** ॥ सर्व विसवापाय विश्व धन महाव
 अरु चे जी ति जी म ला रा क पु न धि पा त मि ना दिप प्र जामि ध

समुदक्ष रुतन समय स्वधम ॥ **वति द्वाय** ॥ सर्व विसवापाय विश्व ध
 न महाव आरु व व लो प ह त मि ना व लो प्र जामि धस सुदक्ष रुतन स
 मय स्वधम ॥ **लोवडा** ॥ सर्व विसवापाय विश्व धन महाव आरु व द
 धि ने व ध व द प्र जामि धस सुदक्ष रुतन समय स्वधम ॥ **मा धि** ॥ स
 र्व विसवापाय विश्व धन महाव आरु व पि स सि त पा त पा त मि ना

धिष्कापुंजा मद्यसद सद्रुत न समय स्वध ॥ **रुतमलानि** ॥ सर्व
 विसवापां य वि श्व ध न स महाव आ तव दसदन रुतया तया
 तमिगा रुतपु जामद्यसमद सद्रुत न समय स्वध ॥ **धमाव**
क्रमन्ता ॥ मुनि १ महाम् विय स्वा ॥ **धम नमन्ता** ॥ सर्व सका
 तपति ३३ ध ध म न ज ग ग न समु ग न स्वरा च वि ३३ ध म हान

धनकेतो विधि

यप तियां त स्वाहा ॥ **जगतिमन्ता** ॥ सर्व ॥ न मा रा ग न न इय सि
 मिगार्य रुत न ३३ वि नि श्व त न आ ना जाय त थ म ग ता या रु न स
 म क्त्वं ध म या ॥ **तथ** ॥ सर्व सका तपति ३३ ध ध म न ज ग ग न
 समु ग न स्वरा च वि ३३ ध म हान य प नि वा न स्वध ॥ **वजनधिय**
य ॥ ३३ ३३ ध ध म न ज ग ग न स्वरा च वि ३३ ध म हान ॥ **३३** ॥ न मा रु सा क्त्वं सिं हा य

धम्मधम्मपुववत्तं ते धम्मत्तं अगसर्वस्सा धयं सर्वइत्तं ॥ १ ॥
नमो सवज्जोडव निखेधम्मधम्मत्तं सवत्तावत्तं सर्वस्सत्तं नाय
यत्तात्तावत्तं नायत्तं सवत्तावत्तं ॥ २ ॥ नमो सवत्तावत्तं निखेधम्मत्तं नाय
नायत्तावत्तं ते धम्मत्तं अगसर्वस्सा धयं सर्वइत्तं ॥ ३ ॥ नमः
स्सत्तावत्तं निखेधम्मत्तं सवत्तावत्तं नायत्तावत्तं अगसर्वधः

जगतायाह्वयसत्तावत्तं ॥ १ ॥ अग्निं अग्निनात्तं इत्तिगविक्राने
माग्निं इत्तिगविक्राने इत्तिगविक्राने धम्मधम्मत्तं अगसर्वस्सा धयं सर्वइत्तं
मने सर्वपापविश्वधने दुत्तावत्तं महावाधिसात्तावत्तं सर्व
नयत्तावत्तं नायत्तावत्तं ॥ २ ॥ सर्वविसवायायविश्वधने महावा
त्तावत्तं अगसर्वधः अगसर्वधः अगसर्वधः अगसर्वधः

2701

सुखधाम ॥ पुन्यार्थ ॥ ३७ ॥ ॐ सर्वथापि तवाग्रमगं सुकृताधिपति
 जननिधम ॥ कमा राजपंक धं नमोस्तु ॥ ॥ मनु विध्वजनः
 याचक ॥ ॥ यद्देवा जानकी वाक् ॥ शशादिवाक् ॥ ॐ पूर्ववाधिसत्त्व
 चलिशायाचलिशायाचलिवाधिसत्त्व ॥ तगवंहि ॥ पितापूर्वगमध
 ॥ सफपुत्रस्वत् ॥ सफनिस्वत् ॥ सृष्टविधनार्थ ॥ का सपवत्तः

यानि केन विधि

त्वादिर्वगत ॥ ३८ ॥ अमानस्यपि नाममु कनामधमय ॥ ३९ ॥ ॐ
 तासमि तासधमसमधु ॥ दधिदुग्धसत्वेन्ता ॥ सनवनासमंसा
 स्वसर्वपकनक्षसहिता ॥ सर्वकुसिनवजिता ॥ र्यविशयप्रदास्याः
 मितसर्वतपसकर्म ॥ ४० ॥ पुंशाकामिपथमपिगापिंनुस्वधम ॥ द्वि
 त्रियपिनामह ॥ त्रिहयपिनामह ॥ वृद्धिपिनामह ॥ ॥ विक्रययक

र्यचास्मि कुल जाग्रा ॥ अर्पणार्थं च धवा आस गता विभुपा क्षेपः
 ह्वाता ह्वात कुरुत मम ॥ ७ ॥ मोदन्ते नु नृणां नृपता नृपे गायताप नाग
 निसंस्का लहिने मार्गसि साधनाय कादिसंका कपिं नु ~~स्वध~~ स्थाना
 दिसंस्वानेपि नु ॥ इति विकारपि नु मुपदि एव स्वध ॥ आसनं स न
 य ॥ **गानक** ॥ अंगम १ एव स्वध ॥ ॥ **लाहावायक** ॥ **मिहियोयक** ॥

ॐ नमो एवमेव सावनप एक ह ना जायत धनया हं य सम्यक् संवे धय
 न **ध** ॥ ॐ सुकृत्य १ समय २ सा न्य **१** दां न्य **१** अस्मा ना य नि तात्
 वं नि ला कुरु नि र्वा नां धि स्म ना धि स्मि न स्वध ॥ ॥ **अर्धपागन** ३
धया ॥ ॐ आकाशद सप्तं वु वक्र दृष्टाव जर्म वुं उप अर्ध ए ज न मि
 न गंधवा नि ना संप्राप्ता न वसनं दशा ॥ ॐ नमो सर्व इ गति प नि ष्वध

नना जायतमगतायाहं न संमयसं वधाय ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ यधने
 विश्वधने सर्वपापविध्वधने ॥ ॐ ॥ यधने सर्वपापविध्वधने ॥ ॐ ॥ यधने
 स्वाहा ॥ ॥ इह स्नानं ॥ नमो हगवते शमाद्यसिधिरयतमगतायाहं
 येसंमयसं वधाय ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ कंकनि १ राचनि १ तिलाचनि १ वाषः
 नि १ शमाघांपुतिरुगसर्वपापक्षयं कथियचुस्वध ॥ ॥ धनक

सि स्नानं ॥ सद्यगसमधुसखं नु। शमाघांपुतिरुगसर्वपापक्षयं
 कथियचुस्वध ॥ ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ तिलादकावमनं पुतिरुस्वाहा ॥ ॥
 ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ नमो हगवते नतुवकुता जायतमगतायाहं येसंमयसं
 वधाय ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ नतु १ गहननतुनतुकिनतुसं तवायनतुविजयन
 नतुमाहावि ॥ ॐ ॥ स्वध ॥ ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ नमो हगवते शमाद्यसिधिरयतमगतायाहं

यानकिरोमिनि

पचमं ददय वेच, ह ~~सुख~~ जागं च, स्वसुप्तमसपुना
ति स एतं, म द्या निरु सुप्तमगथ, नडा मपाद स ए जागे
दसममो म ए च, पिनुदानं पु क न व्या, का श्या का श्च सु सुमाथ
ह उनां ॥ १३ ॥ सु धी माना ह ए पु ता वा ह वु द न स्वां ग थ म गग, :
जा नि ना ध य वं वा वि ह्य म ह यानं श्र व न ॥ १४ ॥ वा स सं र व

गानके ॥ १३ न म च जग सर्व १३ न्य ता, क र्ना मानं, ह स्फा इ
ग ति १३ र वा च ह्या मु वा त्म या ॥ ॥ अ नं द जा वा ज ला यि जा :
वा : १३ खि ना वा न् पि ना, ना म स खि ना वा, ह स्फा इ ग ति १३ र वा :
व ह्यां मु वा त्म या ॥ ~~क मा ध न पा ल य~~ ॥ अ य ग्म त्रा य ॥ ~~प्रा नु ध म य~~ ॥
ध र्म ध म ह श का स गृ ह्य स्व ध म ॥ पिं नु थ य ॥ उ धि ग पि नु स्व ध म ॥